वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :5 अंक : 220 | रविवार 7 दिसम्बर 2025 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

अर्जुन राम मेघवाल ने 'वंदे मातरम् की पुकार, श्रमिक सुरक्षा का विस्तार' प्रदर्शनी का उद्घाटन किया

जोधपुर. शाबाश इंडिया

केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने शनिवार को सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के केंद्रीय संचार ब्यूरो, जोधपुर द्वारा महारानी उच्च माध्यमिक विद्यालय में आयोजित ''वंदे मातरम् की पुकार, श्रमिक सुरक्षा का विस्तार'' थीम आधारित पांच दिवसीय मल्टीमीडिया प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। यह विशेष प्रदर्शनी वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूर्ण होने और श्रमिक सुरक्षा के महत्व को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से आयोजित की गई है। उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए मेघवाल ने कहा कि वंदे मातरम् गीत ने देश के स्वतंत्रता संग्राम में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और आज की पीढ़ी को इसके महत्व से अवगत कराने के लिए ऐसे आयोजन अनिवार्य हैं। उन्होंने जनता से अपील की कि वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने और श्रमिक कल्याण से जुड़ी जानकारियों के लिए अधिक से अधिक संख्या में प्रदर्शनी का लाभ उठाएं। मेघवाल ने संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर के योगदान का विशेष उल्लेख करते हुए कहा कि राष्ट्रीय ग्रिड प्रणाली, रोजगार कार्यालयों की स्थापना, श्रमिक सुधार और गर्भवती महिला श्रमिकों के लिए मातृत्व अवकाश जैसे अनेक प्रगतिशील कदम बाबा साहेब की दूरदृष्टि का परिणाम हैं। उन्होंने कहा कि नए श्रम कानून देश के विकास के लिए महत्वपूर्ण आधार साबित होंगे और श्रमिकों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाएंगे। मेघवाल ने कहा कि यह प्रदर्शनी न केवल वंदे मातरम् के इतिहास और महत्व को दर्शाती है, बल्कि केंद्र एवं राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को भी जनता के समक्ष प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती है। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री की पहल पर देशभर में वंदे मातरम् के 150 वर्ष का विशेष उत्सव मनाया जा रहा है, जिसके तहत अनेक सांस्कृतिक और जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। प्रदर्शनी में विभिन्न विभागों के दर्जनों स्टॉल लगाए गए हैं, जिनमें नगर निगम, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, आयुर्वेद विभाग, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता, कृषि, भारतीय डाक, भारतीय स्टेट बैंक, महिला एवं बाल विकास, महिला अधिकारिता, पंचायती राज, ग्रामीण विकास, जिला उद्योग केंद्र, कर्मचारी भविष्य निधि संगठन सहित कई संस्थाएं शामिल हैं। इनके माध्यम से आमजन को योजनाओं से संबंधित जानकारी और लाभ उपलब्ध कराया जा रहा है। नगर निगम आयुक्त मयंक मनीष ने कहा कि इस प्रदर्शनी के जरिए सरकारी योजनाओं को आमजन तक पहुँचाने का प्रभावी प्रयास हो रहा है, ताकि पात्र लोगों को समय पर लाभ मिल सके। पत्र सूचना कार्यालय एवं केंद्रीय संचार ब्यूरो, जयपुर के निदेशक अनुभव बैरवा ने बताया कि प्रदर्शनी में बनाए गए 9 थीम आधारित जोन, जैसे महिला सशक्तिकरण, डिजिटल इंडिया, युवा विकास, रक्षा नवाचार आदि, ''नए भारत'' की दिशा में हो रहे बदलावों का जीवंत चित्र प्रस्तुत करते हैं।

उत्कृष्ट सेवा के लिए डिस्क प्रदान, राष्ट्रीय पदक की घोषणा से बढ़ा सम्मान

जयपुर में हुआ राज्य स्तरीय कार्यक्रम

जयपुर. कासं

देश की आंतरिक सुरक्षा और नागरिक सहायता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले गृह रक्षा विभाग का 63वां स्थापना दिवस केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थान, गृह रक्षा, जयपुर में उत्साहपूर्वक मनाया गया। राज्य स्तरीय इस समारोह में विभागीय अधिकारियों, कर्मचारियों और स्वयंसेवकों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि, महानिदेशक एवं महासमादेष्टा गृह रक्षा मालिनी अग्रवाल ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और भव्य परेड की सलामी ली। इस अवसर पर केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक द्वारा भारत के गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह, विभागीय मंत्री बाबूलाल खराड़ी और अन्य गणमान्य व्यक्तियों के प्रेरक संदेशों का पठन किया गया। मुख्य अतिथि अग्रवाल ने विभाग में उत्कृष्ट कार्य करने वाले जांबाज अधिकारियों और कर्मचारियों को सम्मानित किया। वर्ष 2024 के लिए भारत सरकार गृह मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा घोषित डीजीसीडी कमेन्डेशन डिस्क एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

देश सेवा को समर्पित

राजस्थान गृह रक्षा का 63वां स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

पंचकल्याणक तैयारी बैठक रविवार 14 दिसम्बर को भट्टारक जी की नसिया में

पदमपुरा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के जयपुर कार्यालय का भट्टारक जी की नसिया में हुआ शुभारंभ

जयपुर. शाबाश इंडिया

विश्व प्रसिद्ध श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा बाडा में आगामी 18-22 फरवरी, 2026 तक आयोजित होने वाले श्रीमज्जिनेन्द्र पंच कल्याणक प्रतिष्ठा- नव निर्मित खडगासन चौबीसी एवं पद्मबल्लभ शिखर कलश ध्वजारोहण महोत्सव के जयपुर कार्यालय का शनिवार, 6 दिसम्बर, 2025 को प्रातः भट्टारक जी की नसिया में भगवान पदमप्रभू के जयकारों के बीच भव्य शुभारंभ किया गया। इस मौके पर प्रबंधकारिणी समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों सहित बड़ी संख्या में गणमान्य श्रेष्ठीजन शामिल हुए। क्षेत्र कमेटी अध्यक्ष एडवोकेट सुधीर जैन दौसा एवं मानद मंत्री एडवोकेट हेमन्त सोगानी ने बताया कि कार्यालय उदघाटन के दौरान प्रातः भगवान पदमप्रभू के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन किया गया। तत्पश्चात 9 बार सामूहिक रूप से णमोकार महामंत्र का उच्चारण किया गया। भगवान पदमप्रभू के जयकारों के साथ मंगल कलश की स्थापना की गई। इस मौके पर आयोजित सभा को सम्बोधित करते हुए अध्यक्ष एडवोकेट सुधीर जैन दौसा एवं महोत्सव संयोजक प्रसिद्ध वास्तुविद राज कुमार कोठ्यारी ने सभी को तन मन धन से इस विश्व स्तरीय धार्मिक आयोजन को सफल बनाने का आव्हान किया। इस मौके पर महोत्सव के लिए 33 उप समितियां बनाई जाकर उनके संयोजकों की घोषणा की गई। मानद् मंत्री एडवोकेट हेमंत सोगानी ने आभार व्यक्त किया। महोत्सव संयोजक राज कुमार कोठ्यारी ने बताया कि भगवान पदमप्रभू की असीम अनुकम्पा से वात्सल्य वारिधि पंचम पट्टाचार्य वर्धमान सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में गणिनी आर्यिका 105 स्वस्तिभूषण माताजी की प्रेरणा से निर्मित खड्गासन चौबीसी के इस पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की तैयारियों के सम्बंध में सभी मंदिर कमेटियों, युवा एवं महिला मण्डल, जैन सोश्यल ग्रुप्स, दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप, अन्य सभी सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं के पदाधिकारियों, समाज के गणमान्य लोगों तथा समाज के सक्रिय कार्यकर्ताओं की विशेष मीटिंग रविवार, 14 दिसम्बर को प्रातः 10.00 बजे भट्टारक जी की नसिया के तोतूका सभागार में प्रातःकालीन भोजन सहित आयोजित की गई है। इस तैयारी बैठक में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति की जानकारी देते हुए आगामी रुपरेखा पर विचार विमर्श किया जाएगा।

दीक्षा त्याग का रास्ता है, उत्सवों का मैदान नहीं

आगम की नजर से एक सरल बात

आज जैन समाज में एक नई आदत बन गई है—हर चीज का 'दिवस' मनाना। दीक्षा दिवस, अवतरण दिवस, आचार्य पद दिवस, पदारोहण दिवस, पट्टाभिषेक दिवस और न जाने क्या-क्या। ऐसा लगता है जैसे दीक्षा त्याग का नाम नहीं रही, बल्कि त्योहारों का नया साधन बन गई है। सवाल बहुत साधारण है—अगर इतने दिन मनाने ही थे, इतना तामझाम और महिमा ही चाहिए थी तो संसार में रहकर भी सब किया जा सकता था, फिर दीक्षा लेने की जरूरत ही क्या थी? आगम साफ कहते हैं कि मुनि का जीवन उदासीनता, अपरिग्रह और शांति पर टिका होता है। आचारांग सूत्र में बताया गया है कि मुनि न सम्मान चाहता है, न नाम, न उत्सव और न शोर-शराबा। उत्तराध्ययन सूत्र में लिखा है कि साधु का काम है साधना करना, लोगों के बीच भीड़ का केंद्र बनना नहीं। आगमों में कहीं भी साधु के जन्मदिन, दीक्षा दिवस या पद दिवस मनाने जैसी कोई बात नहीं। उल्टा चेतावनी दी गई है कि मुनि लोक-व्यवहार और दिखावे से दूर रहे। जब साधु का जीवन लोक से ऊपर बताया गया है तो फिर उनके नाम पर इतने लौकिक कार्यक्रम क्यों? श्रावक धर्म भी बड़ा साफ है। दसवैकालिक सूत्र में कहा गया है कि श्रावक साधुओं का सम्मान विवेक के साथ करे, आँख बंद करके नहीं। धर्म में पैसा वहां लगे जहां जरूरत है—साधार्मिक, जीवदया, रोगी, शिक्षा और सही धार्मिक कार्य। आज हो क्या रहा है? लाखों-करोड़ों सिर्फ फूल, स्वागत-द्वार, गाड़ियाँ, मंच, प्रचार और पंडाल में उड़ जाते हैं। मुनि की दीक्षा—जो त्याग का प्रतीक है—वही अब साल में एक बार उत्सव का बहाना बन जाती है। जन्मदिन, दीक्षा-दिवस, पद-दिवसङ्क इतनी खुशियाँ अगर चाहिए थीं तो फिर घर-गृहस्थी छोड़ने की क्या मजबूरी थी? दीक्षा तो उत्सवों से दूर जाने का नाम है, न कि नए उत्सव जोड़ने का। समाज का भी नुकसान होता है। गरीब श्रावक तक दबाव में आकर पैसा खर्च करता है, जो बच्चों की पढ़ाई या घर के काम में लगना चाहिए था वह बेकार के दिखावे में चला जाता है। युवाओं को लगता है कि साधु धर्म भी किसी सेलिब्रिटी जैसा है जिसके लिए मंच चाहिए, रोशनी चाहिए, और तालियाँ चाहिए। यह सब देखकर असली त्याग की महिमा खत्म हो जाती है। समाधान भी बहुत सरल है। साधु और समाज दोनों को आगम के अनुसार चलना होगा। साधु अगर आगम के अनुसार जीवन जिएँ तो वे खुद ही इन आयोजनों को स्वीकार नहीं करेंगे। समाज विवेक रखे और पैसा सही जगह लगाए। साधु का सम्मान शांति से होता है, महिमा से नहीं। त्याग की कीमत सरलता से बढ़ती है, भव्यता से नहीं। जैन धर्म का अस्तित्व साधु दिवसों से नहीं बचेगा, बल्कि आगम के बताए रास्ते—त्याग, जीवदया, संयम और सादगी—से बचेगा। अगर दीक्षा को उत्सव बना दिया जाएगा तो फिर त्याग का अर्थ ही खत्म हो जाएगा। और जब त्याग ही मिट जाएगा तो धर्म का मुल्य कहाँ बचेगा?

नितिन जैन संयोजक – जैन तीर्थ श्री पार्श्व पद्मावती धाम, पलवल (हरियाणा) जिलाध्यक्ष – अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन, पलवल मोबाइल: 9215635871

आचार्य वर्धमान सागर महाराज के निवाई आगमन को लेकर विशेष तैयारियां जोरों पर

आचार्य वर्धमान सागर महाराज का निवाई में लगभग 14 - 15 दिसंबर को मंगल प्रवेश संभावित

आचार्य संघ का एवं मुनि अर्चित सागर महाराज का मंगल मिलन हुआ

निवाई. शाबाश इंडिया

सकल दिगम्बर जैन समाज के श्रद्धालुओं ने निवाई में शीतकालीन प्रवास हेतु आचार्य वर्धमान सागर महाराज के शनिवार को श्री फल चडाक र अगुवानी की। अखिल भारतीय जैन धर्म प्रचारक एवं जैन समाज के प्रवक्ता विमल पाटनी जौंला ने बताया कि शनिवार को सुबह आचार्य वर्धमान सागर महाराज एवं जैन मुनि हितेन्द्र सागर महाराज संघ के दर्शनों को लेकर श्रद्धालुओं का जत्था कोड्याई गांव पहुंचा जहां जैन समाज के श्रद्धालुओं ने निवाई आगमन के लिए जयघोष के साथ मंगल अगुवानी करते हुए पूजा अर्चना की। जौंला ने बताया कि आचार्य श्री वर्धमान सागर महाराज संघ का निवाई में लगभग 14 - 15 दिसंबर को मंगल पदार्पण प्रस्तावित है। आचार्य श्री के निवाई आगमन को लेकर विशेष तैयारियां की जा रही है। जिसमें सभी गुरु भक्त परिवार एवं मुनि सेवा समिति व्यवस्थाओं में जुटे हुए हैं। जिसमें गुरु भक्त लाड़देवी जैन, गोपाल जैन, शंभु कठमाणा, सन्मति चंवरिया, मोहित चंवरिया, पारसमल महावीर प्रसाद पराणा, सुरेश पाटनी, मनोज पाटनी, पारसमल चेनपुरा, रमेश चंद गिन्दोडी, सुशील गिन्दोडी, विष्णु बोहरा राहुल बोहरा, नेमीचंद सिरस, नेमीचंद गंगवाल, चेतन गंगवाल, अशोक कटारिया, अमित कटारिया, पवन बोहरा, दिनेश चंवरिया, राकेश संधी, त्रिलोक रजवास, पदमचंद टोंग्या, विमल सौगानी, राजेन्द्र सेदरिया, सुनील चेनपुरा, रोनक बोहरा, सहित अनेक गणमान्य लोग व्यवस्थाओं में जुटे हुए हैं। विमल पाटनी जौंला ने बताया कि संत निवास नसियां जैन मंदिर पर 26 जैन साधु का स्वाध्याय एवं प्रतिक्रमण निरन्तर किया जा रहा है। जिसमें जैन मुनि प्रभव सागर महाराज, मुमुक्षु सागर महाराज, प्रणीत सागर महाराज, एवं जैन आर्यिका शुभ मति माताजी, विलोक मति माताजी, महायश मति माताजी, पूर्णिमा मति माताजी, दिव्ययश मति माताजी, एवं पद्यय यश मति माताजी सहित सभी जैन संतों द्वारा प्रतिदिन बालक बालिकाओं को स्वाध्याय एवं ध्यान क्रिया का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। जौंला ने बताया कि शनिवार को मुनि अर्चित सागर महाराज विज्ञा तीर्थ गुन्सी से मंगल विहार करके निवाई पहुंचे जहां जैन समाज के श्रद्धालुओं ने अगुवानी की।

विशाल घट यात्रा एवं ध्वजारोहण से सिद्ध चक्र विधान का भव्य शुभारंभ हुआ

राघौगढ़. शाबाश इंडिया। धर्मनगरी राघौगढ़ में आचार्य विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य ज्येष्ठ श्रेष्ठ मुनि योग सागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में आयोजित श्री सिद्ध चक्र महामंडल विधान एवं विश्व शांति महायज्ञ का भव्य शुभारंभ विशाल घट यात्रा एवं विधि विधान से ध्वजारोहण से हुआ। भारतीय जैन मिलन के राष्ट्रीय संरक्षक एवं जैन समाज ट्रस्ट कमेटी मार्गदर्शक मंडल के वरिष्ठ सदस्य विजय कुमार जैन ने बताया है विशाल घट यात्रा का जुलूस श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर राघौगढ़ से प्रारंभ हुआ। जुलूस में सबसे आगे मुनि योग सागर जी महाराज सत्संग चल रहे थे एवं धर्म प्रभावना बढ़ा रहे थे।उनके पीछे रथ में भगवान विराजमान कर चल रहे थे। इंद्राणियां केसरिया वस्त्र पहने मंगल कलश लेकर चल रही थी। घट यात्रा का जुलूस नगर के प्रमुख मार्गो से गाजे बाजे एवं गगन भेदी नारों के साथ संत सुधा सागर धाम स्थित संभवनाथ जिनालय परिसर पहुंचा। जहां पर ध्वजारोहण विधि विधान से सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्रह्मचारी संजीव भैया जी के निर्देशन में जैन समाज के अध्यक्ष सिंघई अशोक कुमार भारिल्य एवं विधान पुण्यार्जक परिवार के वरिष्ठ एवं नगर गौरव मुनि निर्लेप सागर जी गृहस्थ जीवन के ताऊ जी पूर्व न पा अध्यक्ष डां अजित रावत सहित परिवारजनों ने किया। धर्म सभा में मंगल प्रवचन करते हुए मुनि श्री योग सागर जी ने कहा श्री सिद्ध चक्र महामंडल विधान का आयोजन आप सभी का महान पुण्य है। आपने सभी को आव्हान किया मन लगाकर भाग ले। आपने विधान की पूजन के समय मोबाइल का त्याग करने का आव्हान किया।

वेद ज्ञान

संसार परिवर्तनशील है

यह संसार परिवर्तनशील है। इस संसार में कोई किसी का नहीं है। आप स्वयं में अकेले थे, हैं, और रहेंगे। जगत में संबंध बनते, बिगड़ते रहते हैं। स्मरण करें, जब आप प्रथम बार विद्यालय गए थे। दाखिला लेने के बाद उस विद्यालय में कितने लोगों से संयोग बना। कालांतर में धीरे-धीरे आगे बढ़ते गए, नए-नए संबंध बनने लगे और पुराने टूटते गए। जगत में रहते हुए संयोग बनते ही रहते हैं और बिगड़ते भी जाते हैं। जब संयोग बना, तब भी आप थे और जब वियोग हुआ, तब भी आप ही स्वयं थे, उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। आप वहीं के वहीं रहे। आपका अस्तित्व किसी के साथ संबंध बनने व समाप्त हो जाने के अधीन नहीं है। संयोग बनना व वियोग होना तो सांसारिक प्रपंच मात्र है। हां, संसार में जीवित रहने पर लोगों से संबंध बनते अवश्य हैं, परंतु यह संदेह रहित है कि सत्यस्वरूप आप अकेले थे और अकेले ही रहेंगे। मनुष्य का पारिवारिक संबंध जिसे अति आत्मीय व रक्त का संबंध कहा जाता है, जो सांसारिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण व सशक्त माना जाता है, ये संबंध भी स्थाई नहीं हैं। इस सत्यता का प्रकटीकरण तभी हो पाता है, जब कोई सबसे निकटतम प्रियजन जिससे कोई मनुष्य अतिस्नेह करता हो, जिसे अपना कहते-कहते उसकी जीभ थकती नहीं, जब वह इस संसार से विदा हो जाता है, तब उस मनुष्य के मस्तिष्क को जोरदार झटका लगता है और यह सच्चाई प्रकट हो जाती है कि इस जगत में कोई किसी का नहीं है। सभी इस जीवन के मार्ग में सफर करते हुए यात्री मात्र हैं। तभी वह सोते से जागता है। ढका हुआ सत्य पूर्ण रूप से प्रकट होकर सामने आ जाता है। वह ठहरकर सोचने लगता है कि अरे मैंने तो सोचा था कि संसार से विदा हो जाने वाले से हमारा कभी संबंध विच्छेद होगा ही नहीं, यह केवल मेरा मिथ्या भ्रम ही था। इस सांसारिक जीवन यात्रा में लोग बदलते हैं, समाज बदलता है और दुनिया बदलती है, मनुष्य का समय व आयु भी परिवर्तित हो जाती है, परंतु सत्य स्वरूप आप स्वयं के स्वयं ही रहते हो।

संपादकीय

भारत-रूस मैत्री का इतिहास और वर्तमान

द्वितीय विश्वयुद्ध में सोवियत संघ को महान सफलता दिलाने वाले तथा युद्धोपरांत सर्वमान्य नेता बने मार्शल जोसेफ स्टालिन के निधन पर भारतीय लोकसभा में उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा था मार्शल स्टालिन एक ऐसे नेता थे, जो शांति में भी बड़े नेता थे और युद्ध में भी। यह कथन केवल स्टालिन तक सीमित नहीं था, बल्कि भारत और सोवियत संघ के बीच गहरी ऐतिहासिक मैत्री का भी संकेत था।

1917 की बोल्शेविक क्रांति के समय भारत के अधिकांश राष्ट्रीय नेताओं ने इसका स्वागत किया। उन्होंने इसे मानव इतिहास में एक नए अध्याय की शुरूआत माना। पंडित नेहरू स्वतंत्रता से पहले कई बार सोवियत संघ गए और वहाँ के औद्योगिक तथा सामाजिक विकास से प्रभावित हुए। इसी दौर में भारत में कम्युनिस्ट पार्टियों, भारत-सोवियत मैत्री संघ और कई प्रगतिशील संगठनों ने सोवियत संघ के साथ सहयोग और मैत्री को मजबूत करने का काम किया। फिर भी, भारत में हमेशा एक वर्ग ऐसा रहा जिसने सोवियत संघ से रिश्तों का विरोध किया। इस विरोध का नेतृत्व अमेरिकी विचारों से प्रभावित कुछ बुद्धिजीवियों और संगठनों ने किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और जनसंघ भी नेहरू सरकार की सोवियत-मैत्रीपूर्ण विदेश नीति के आलोचक थे। वे कहते थे कि भारत सोवियत प्रभाव में झुक गया है लेकिन इन आलोचनाओं से द्विपक्षीय संबंधों पर कोई बड़ा असर नहीं पड़ा। 1971 में बांग्लादेश संकट जब चरम पर था, तब प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने सोवियत संघ के साथ बीस वर्षीय मैत्री संधि पर हस्ताक्षर किए। इस संधि में यह प्रावधान था कि भारत पर किसी बाहरी आक्रमण की स्थिति में सोवियत संघ सहायता करेगा। जनसंघ ने इस संधि का कड़ा विरोध किया, पर भारत ने इसे राष्ट्रीय सुरक्षा का महत्वपूर्ण स्तंभ माना। समय बदला, सरकारें बदलीं। अटल बिहारी वाजपेयी जब विदेश मंत्री बने, तब उनके सामने यही प्रश्न आया कि भारत-सोवियत संबंधों को वे किस दृष्टि से देखते हैं। भोपाल में दिए गए उनके उत्तर यह मैत्री इज नॉन-नेगोशियेबल है ने स्पष्ट कर दिया कि सोवियत संघ (और बाद में रूस) के साथ संबंध किसी दल की नीति नहीं, बल्कि भारत की दीर्घकालिक रणनीति का हिस्सा हैं। सोवियत संघ द्वारा भारत को दी गई बिना शर्त की औद्योगिक सहायता भिलाई इस्पात संयंत्र, भारी उद्योग, ऊर्जा परियोजनाएँ ने इस मित्रता को मजबूत नींव दी। रक्षा सहयोग ने इसे और गहरा किया। भारत के प्रमुख हथियार टैंक, मिसाइलें, लड़ाकू विमान बहुत हद तक सोवियत तकनीक पर आधारित रहे। 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद भी यह मैत्री कमजोर नहीं पड़ी। नई भू-राजनीतिक परिस्थितियों में भी रूस भारत का विश्वसनीय साझेदार बना रहा। 2014 में नरेंद्र मोदी के सत्ता में आने पर कई विश्लेषक मानते थे कि भारत शायद अमेरिका के अधिक निकट जाकर रूस से दूरी बढ़ा देगा, पर ऐसा नहीं हुआ। भारत ने दोनों देशों के साथ संतुलन बनाकर रखा और रूस के साथ ऐतिहासिक विश्वास को बरकरार रखा।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

पुतिन का भारत दौरा

मनोज कुमार अग्रवाल

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की दो दिवसीय भारत यात्रा ऐसे समय हुई है, जब वैश्विक राजनीति गहरे बदलावों से गुजर रही है। गुरुवार, 4 दिसंबर 2025 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निमंत्रण पर नई दिल्ली पहुंचे पुतिन का एयरपोर्ट पर स्वयं प्रधानमंत्री ने स्वागत किया जो इस यात्रा के महत्व को दर्शाता है। चार वर्ष बाद हो रही यह यात्रा रणनीतिक साझेदारी, रक्षा सौदों, ऊर्जा सहयोग और व्यापारिक संबंधों को नए स्तर पर ले जाने की संभावनाएं लिए हुए है। शुक्रवार को पुतिन का औपचारिक स्वागत हुआ, जिसके बाद 23वां भारत-रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन आयोजित हुआ। इस दौरान तेल आपूर्ति बढ़ाने, स्थानीय मुद्राओं में व्यापार, न्यूक्लियर एनर्जी सहयोग, छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर परियोजनाओं और प्रमुख रक्षा समझौतों पर चर्चा हुई। यह यात्रा भारत-रूस रणनीतिक साझेदारी के 25 वर्ष पूरे होने के अवसर पर भी विशेष महत्व रखती है। भारत की पूर्व राजनयिक वीना सीकरी के अनुसार, प्रधानमंत्री का स्वयं स्वागत के लिए जाना यह स्पष्ट संकेत है कि यह यात्रा अत्यंत निर्णायक रहेगी। यात्रा ऐसे समय हुई जब यूक्रेन युद्ध, पश्चिमी प्रतिबंधों और एशिया में शक्ति-संतुलन की बदलती स्थितियों ने वैश्विक समीकरणों को पूरी तरह बदल दिया है। पश्चिमी देश जहां रूस को अलग-थलग करने की कोशिश में हैं, वहीं भारत रूसी राष्ट्रपति का गर्मजोशी से स्वागत कर अपनी रणनीतिक स्वायत्तता का स्पष्ट संदेश दे रहा है कि उसकी विदेश नीति किसी दबाव में नहीं चलती। अमेरिका की ओर से भारत पर बढ़ाए गए टैरिफ और पाकिस्तान को मिली नई रणनीतिक प्राथमिकताओं ने वाशिंगटन-दिल्ली संबंधों में अनिश्चितता बढ़ाई है। इसी पृष्ठभूमि में पुतिन का भारत आना न केवल रूस की कूटनीतिक वैधता को मजबूत करता है, बल्कि भारत-रूस रिश्तों को नए अध्याय में प्रवेश कराता है। भारत की 60-70 प्रतिशत रक्षा प्रणाली रूसी तकनीक पर आधारित रही है। एस-400, ब्रह्मोस, टी-90 टैंक, मिग-29, सुखोई-30 और परमाणु पनडुब्बियां इस सामरिक विश्वास की सबसे स्पष्ट मिसालें हैं। बदलती भू-राजनीति में जब तकनीकी श्रेष्ठता निर्णायक बन चुकी है, यह यात्रा एस-500 जैसे उन्नत रक्षा सिस्टम, ब्रह्मोस के नए संस्करण और संयुक्त प्लेटफॉर्म विकास की दिशा में आगे बढ़ने का अवसर प्रदान कर सकती है। यूक्रेन युद्ध के दौरान जब पश्चिम ने रूस से दूरी बनाई, भारत ने राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देते हुए रियायती रूसी तेल खरीदना जारी रखा। यह न केवल आर्थिक रूप से लाभकारी रहा बल्कि ऊर्जा सुरक्षा के मोर्चे पर भारत को मजबूती मिली। व्यापार के मोर्चे पर भी रूस भारतीय कंपनियों के लिए नए दरवाजे खोल रहा है। फूड प्रोसेसिंग, दवा, मशीनरी, डिजिटल सेवाएं, कृषि और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में भारतीय निर्यातकों के लिए व्यापक अवसर हैं। पश्चिमी कंपनियों के रूस से हटने के बाद यह अंतराल भारत भर सकता है।

भविष्य की दिशा

पुतिन की यह यात्रा स्पष्ट संकेत देती है कि अंतर्राष्ट्रीय संबंध केवल शक्ति-संतुलन पर आधारित नहीं होते, बल्कि विश्वास, इतिहास और रणनीतिक समानता पर भी टिके होते हैं। भारत-रूस संबंध लगभग 70 वर्षों से वैश्विक उतार-चढ़ाव में भी स्थिर रहे हैं। आज जब विश्व बहुध्रुवीय व्यवस्था की ओर बढ़ रहा है, यह साझेदारी आने वाले दशकों में और मजबूत होने की संभावना रखती है।

डॉ चारुल जैन को ग्लोबल समीट 2025 में आईएफइआरडी एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित

राजेश जैन दद्दू. शाबाश इंडिया

इंदौर। जैन समाज इंदौर के गौरव शाली सम्माननीय डी.के.जैन (फ्ी३. ऊ्रढ) की होनहार गौरवशाली,प्रतिभावान सुपुत्री डॉ चारुल जैन को देहली में आयोजित ग्लोबल समीट 2025 में आईएफइआरडी एक्सीलेंस अवार्ड (शैक्षणिक नेतृत्व के लिए) से सम्मानित किया गया। धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने कहा कि यह दिगंबर जैन समाज इंदौर के लिए बड़े ही हर्ष एवं गौरव की बात है। चारुल की इस उपलब्धि पर दिगंबर जैन समाज के वरिष्ठ समाजसेवी डॉ जैनेन्द्र जैन महावीर ट्रस्ट के अध्यक्ष अमित कासलीवाल फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोहर झांझरी, टीके वेद हंसमुख गांधी नरेंद्र वेद सुशील पांड्या मंयक जैन एवं फेडरेशन की राष्ट्रीय शिरोमणि संरक्षिका श्रीमती पुष्पा कासलीवाल, रेखा जैन श्रीफल एवं समाज जन ने डी. के.जैन (**RETD DSP**) साहब परिवार को बधाई एवं शुभकामनाएं दी एवम डॉक्टर चारुल के उज्जवल भविष्य की कामना की।

श्री महावीर कॉलेज में आयोजित National Job Fair 2.0

जयपुर

सी-स्कीम स्थित श्री महावीर कॉलेज परिसर में जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन जयपुर चैप्टर के संयुक्त तत्वावधान में 6 दिसम्बर 2025, शनिवार को National Job Fair 2.0 ! का भव्य आयोजन किया गया। इस जॉब फेयर में कोई रजिस्ट्रेशन शुल्क नहीं लिया गया। इस प्लेसमेंट ड्राइव में 21 से अधिक प्रतिष्ठित कंपनियों ने भाग किया, जिनमें प्रमुख रूप से Premier Bar, Ritwik Finance, Terranova Foods Pvt. Ltd., Mindspace Outsourcing, Tradeswift Broking Pvt. Ltd., Global Presentation, INA Solar, Achal Jewels Pvt. Ltd., Celebal Technologies, Vinayak Jewels India Pvt. Ltd., Gud Mishri Pvt. Ltd., Blazels Infinity Pvt. Ltd., Impressive Star Pvt. Ltd., Stareef Hospitality Pvt. Ltd., Baid Finserv Limited, Ganga Kotecha Group, MS Fincap & Company, Click 4 Flats LLP आदि शामिल थीं। इन कंपनियों द्वारा मार्केटिंग, एचआर, ऑपरेशंस, फाइनेंस, बीपीओ, आईटी सेक्टर, सेल्स मैनेजर, कस्टमर रिलेशन ऑफिसर सहित विभिन्न पदों पर अवसर प्रदान किए गए। अभ्यर्थियों का चयन साक्षात्कार प्रक्रिया के माध्यम से किया गया। जॉब फेयर के दौरान जीतो की ओर से College to Corporate Session का भी आयोजन किया गया, जिसके मुख्य वक्ता गौरव शर्मा (लीडरशिप कोच, ऑथर, एजुकेटर) थे। उन्होंने फर्स्ट इंप्रेशन एवं कम्युनिकेशन, करियर गाइडेंस, स्किल डेवलपमेंट एवं इंडस्ट्री इनसाइट्स जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर मार्गदर्शन प्रदान किया।कॉलेज के प्राचार्य डा.आशीष गुप्ता ने बताया कि छात्रों को रोजगार उन्मुख बनाने के लिए श्री महावीर कॉलेज प्रतिवर्ष इस प्रकार के प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन करता है।श्री महावीर दिगंबर जैन शिक्षा परिषद के अध्यक्ष उमरावमल संघी, कोषाध्यक्ष महेश काला, उपाध्यक्ष सुरेंद्र पांड्या, कॉलेज कन्वीनर प्रमोद पाटनी, कार्यकारिणी सदस्य विनोद कोटखावदा ने विभिन्न कॉलेजों से आए हुए विद्यार्थियों को साक्षात्कार हेतु शुभकामनाएँ दीं। इस जॉब फेयर में राजस्थान के विभिन्न कॉलेजों से लगभग 400 से अधिक अभ्यर्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

डा० आशीष गुप्ताप्राचार्य

अरावली की सिकुड़ती ढाल

भारत के उत्तरी भूगोल में अरावली केवल एक पर्वतमाला नहीं, बल्कि एक जीवित पारिस्थितिक दीवार है जो भूजल का भंडार, प्राकृतिक शीतलन तंत्र, धूल-रोधी अवरोध और मानसून का संतुलक बनने की अद्वितीय क्षमता रखती है। किंतु हाल में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा पर्यावरण मंत्रालय की उस अनुशंसा को स्वीकार करना, जिसमें केवल वे भू-आकृतियां जो स्थानीय भू-स्तर से 100 मीटर से अधिक ऊंची हों अरावली की पहाड़ी मानी जाएंगी, इस पूरी पर्वतमाला को अभूतपूर्व कानूनी और पर्यावरणीय संकट में धकेल सकता है। इस परिभाषा के बाहर वे 80-90% क्षेत्र चले जाएंगे, जो दिखने में भले ही छोटे हों, पर वास्तविक पारिस्थितिकी तंत्र के सबसे सक्रिय घटक हैं ढालें, कटान-क्षेत्र, कटक, झाड़ी-वन, पथरीले टीले और टूटे पहाड़। सबसे बड़ा खतरा यह है कि अरावली के संरक्षण का आधार अब ऊंचाई बन जाएगा, न कि परिस्थितिक कार्य। किसी भी पर्वत-तंत्र की भूमिका उसकी ऊंचाई से नहीं, बल्कि उसकी स्थिति, निरंतरता, मिट्टी की परतों, जल-नालियों, वनस्पतियों, हवा-रोध क्षमता और भूजल-पुनर्भरण योग्यता से निर्धारित होती है। एनसीआर दिल्ली के आसपास फैली निम्न ऊंचाई वाली अरावली श्रृंखलाएं सच अर्थों में क्षेत्रीय पर्यावरण संतुलन की रीढ़ हैं। इन्हें हटाने या इनके बीच कृत्रिम दरारें डालने का सीधा अर्थ है दिल्ली की हवा और अधिक प्रदूषित, भूजल और अधिक गहरा, तथा गर्मी और भी विकराल होना। दिल्ली-एनसीआर आज पहले से ही चरम प्रदूषण, गिरते भूजल, सूखते जलाशयों और 50 डिग्री तक पहुंचती गर्मी के खतरे से जूझ रहा है। ऐसे समय में अरावली का कमजोर होना दिल्ली की रहने-लायक स्थितियों को ही बदल सकता है। जब पहाड़ काटे जाते हैं, तो मिट्टी का प्राकृतिक संलग्नन टूट जाता है। यह मिट्टी हवा के झोंकों में सूक्ष्म कणों (पीएम-10 और पीएम-2.5) के रूप में दिल्ली की हवा में घुलने लगती है। दिल्ली की भौगोलिक संरचना पहले ही कटोरा-नुमा है, जहां सर्दियों में हवा का प्रवाह धीमा पड़ जाता है। ऐसे में अरावली का टूटना धूल, स्मॉग और प्रदूषण के ठहराव को कई गुना बढ़ा देता है। राजस्थान की ओर से आने वाली गर्म, शुष्क हवाओं को रोकने वाला प्राकृतिक अवरोध हटते ही दिल्ली पर धूल और गर्मी का बोझ और गहरा होता जाता है। दूसरा संकट पानी से जुड़ा है। अरावली की पहाड़ियां प्राकृतिक वॉटर रिचार्ज जोन हैं। इनकी पथरीली परतों में मौजूद दरारें और रंध्रता वर्षा जल को धरती में सैकड़ों फीट तक पहुंचाती हैं। लेकिन जब इन्हें काटकर समतल किया जाता है, जब इनके ऊपर कंक्रीट, सड़कें और निर्माण फैलते हैं, तब भूजल-पुनर्भरण की पूरी प्रणाली ध्वस्त हो जाती है। पानी अब रिसने के बजाय बह जाता है। मिट्टी कटाव बढ़ता है, और छोटे जलस्रोत नष्ट होने लगते हैं। परिणामस्वरूप गुड़गांव, फरीदाबाद, मेवात और दक्षिणी दिल्ली में भूजल 800-1000 फीट तक पहुंच चुका है और आगे और गिरने का खतरा लगातार बढ़ रहा है। अरावली का एक और महत्त्वपूर्ण पक्ष है यह थार रेगिस्तान की पूर्वी सीमा पर खड़ी एक रेगिस्तान-रोधी दीवार है। अरावली की ढालों के सिकुड़ने से राजस्थान की ओर से आने वाली धूल और रेतीली हवाओं के रास्ते खुल जाते हैं। यदि यह कवच और कमजोर हुआ, तो दिल्ली-हरियाणा की ओर रेतीले क्षेत्रों का खिसकाव शुरू हो जाएगा इसे वैज्ञानिक रूप से डेजर्टिफिकेशन की पूर्वगामी प्रवृत्ति कहा जाता है। यह केवल धूल नहीं बढ़ाएगा, बल्कि मिट्टी की उर्वरता, स्थानीय जलवायु और वर्षा के पैटर्न तक को बदल सकता है। सबसे चिंता की बात यह है कि 100 मीटर की कानूनी परिभाषा अरावली को खंडों में बांट देगी। किसी पर्वतमाला की शक्ति उसकी निरंतरता में होती है, न कि व्यक्तिगत चोटियों की ऊंचाई में। जब यह श्रृंखला टूटती है, तो हवा, जल और तापमान से संबंधित सभी प्राकृतिक भूमिकाएं क्षतिग्रस्त हो जाती हैं। यही फ्रेगमेंटेशन अवैध निर्माणकर्ताओं और खनन माफियाओं को खुला निमंत्रण देता है कि वे पर्वत-ढालों को गैर-पहाड़ी भूमि बताकर निर्माण योग्य क्षेत्र घोषित कराएं। ऐसी स्थिति में दिल्ली का प्रदूषण केवल बढ़ेगा नहीं, बल्कि स्थायी रूप से जम भी जाएगा। भूजल और नीचे जाएगा। गर्मी और अधिक खतरनाक होगी। दिल्ली की जीवन-क्षमता गंभीर संकट में पड़ जाएगी।

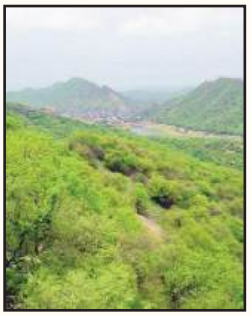

सबसे बड़ा खतरा यह है कि अरावली के संरक्षण का आधार अब ऊंचाई बन जाएगा, न कि परिस्थितिक कार्य। किसी भी पर्वत-तंत्र की भूमिका उसकी ऊंचाई से नहीं, बल्कि उसकी स्थिति, निरंतरता, मिट्टी की परतों, जल-नालियों, वनस्पतियों, हवा-रोध क्षमता और भूजल-पुनर्भरण योग्यता से निर्धारित होती है।

समाधान क्या है?

अरावली की कानूनी परिभाषा ऊंचाई आधारित नहीं, परिस्थितिक कार्य आधारित होनी चाहिए। झाड़ियों, चरागाहों, पथरीले परिदृश्यों और कटान-ढालों सहित सभी को अरावली का अभिन्न हिस्सा माना जाए। खनन और अवैध निर्माण पर पूर्ण प्रतिबंध लागू किया जाए और उल्लंघनों पर कठोर दंड दिया जाए। टूटे पहाड़ों का पुनरुत्थान मिट्टी भराव, देशज वृक्षारोपण और जल-संचयन संरचनाओं के माध्यम से प्राथमिकता बने। पर्वतमाला की भौतिक निरंतरता पुनर्स्थापित की जाए, ताकि दिल्ली-एनसीआर को एक सुदृढ़, अविच्छिन्न पर्यावरणीय कवच मिल सके। अरावली केवल राजस्थान, हरियाणा या दिल्ली का 'स्थानीय मसला' नहीं है। यह उत्तरी भारत की जलवायु सुरक्षा दीवार है। इसे कमजोर करना दिल्ली की हवा को और जहरीला, उसका पानी और संकटग्रस्त, और उसकी गर्मी को और भयानक बना देना है। अरावली का टूटना, दिल्ली का टूटना है। यदि अरावली बचेगी, तभी दिल्ली सांस ले पाएगी। **-डॉ. सत्यवान सौरभ**

अरावली का वन-कवच, उसकी झाड़ियां, ऊबड़-खाबड़ ढालें और विविध वनस्पतियां प्राकृतिक शीतलन तंत्र का काम करती हैं। ये न केवल वाष्पोत्सर्जन से वातावरण को ठंडा करती हैं, बल्कि चलती गर्म हवाओं को भी अवरुद्ध करती हैं। जब इनके स्थान पर कंक्रीट और सड़कें आ जाती हैं, तो पूरा क्षेत्र हीट-आइलैंड में बदल जाता है। वैज्ञानिक अध्ययन बताते हैं कि अरावली का क्षरण दिल्ली के तापमान में 0.2-0.4 डिग्री तक की वृद्धि जोड़ता है। बड़े पैमाने पर बदलाव होने पर यह वृद्धि कई डिग्री तक पहुंच सकती है। इसका सीधा प्रभाव बिजली की खपत, पानी की मांग, स्वास्थ्य पर पड़ने वाला तनाव और शहरी ताप-दबाव में वृद्धि के रूप में सामने आता है।

मन, भाव और विचार ऐसे रखो कि आपके मन की निश्छलता, भावों की विशुद्धि, और विचारों की पारदर्शिता पर लोग विचार करें : अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज

नई दिल्ली. शाबाश इंडिया। अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय पियूष सागरजी महाराज की अहिंसा संस्कार पदयात्रा भारत मंडपम दिल्ली की और चल रही है उसी श्रृंखला में उपस्थित गुरु भक्तों को संबोधित करते हुए आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ने कहा कि वह मन, भाव और विचार ऐसे रखो कि आपके मन की निश्छलता, भावों की विशुद्धि, और विचारों की पारदर्शिता पर लोग विचार करें..! अच्छा सोचे, अच्छा देखे, अच्छा बोले, अच्छा सुने, अच्छा करे, और सबके प्रति सदभाव प्रेम बनाकर चले फिर देखें, सफलता कैसे आपके चरण चूमती है। जीवन की सफलता के लिए मस्तिष्क में आइस की फैक्ट्री और जुबान पर शूगर की मशीन लगायें। जो लोग धैर्य, विवेक बुद्धि, और संकल्प के श्रम से अपने कार्य को अंजाम देते हैं, वही लोग सफलताओं के शिखर पर पहुंच पाते हैं। जो जीवन में आने वाली हर एक समस्या को समता की बुहारी से अपने मार्ग को बुहारते चले जाते हैं, वे लोग ही हँसते मुस्कुराते हुये एक दिन अपने लक्ष्य को पा लेते हैं। जीवन के हर मार्ग में, फूल है तो कांटे भी मिलेंगे, अच्छा है तो बुरे का सामना भी करना पड़ेगा, फर्श है तो फिसलन भी मिलेगी, और बहुत कुछ देखने और सुनने को भी मिलेगा। यदि हम इन सबमें उल्झेंगे तो हम अपने लक्ष्य और मंजिल तक नहीं पहुंच पायेंगे। इसलिए अपने लक्ष्य और मंजिल को अर्जुन की तरह ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ते रहो... सूर्य नगर जैन मंदिर, गाज़ियाबाद में इतिहास का एक अद्वितीय स्वर्णाक्षरी अध्याय अंकित– साधना महोदधि, अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महामुनिराज ससंधश्रके दर्शन करने आयी आर्यिका श्री पूर्णमती माताजी ससंध का अद्वितीय, दिव्य और महा-मंगलमय मिलन ! यह अलौकिक संगम केवल एक भेंट नहीं, जैन समाज के लिए अद्वितीय सद्भाव, एकता और आध्यात्मिक उत्कर्ष का प्रखर प्रतीक बनकर उदित हुआ है। ऐसा दुर्लभ मिलन सदियों तक प्रेरणा की अमिट ज्योति बनकर प्रकाश फैलाता रहेगा ! **-नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल औरंगाबाद**

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर **'शाबाश इंडिया'** आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

बिना भावों के कोई क्रिया फल नहीं देती : उपाध्याय विभंजन सागर

सम्यग्दर्शन के साथ प्रतिदिन षट कार्य करें: मुनि अक्षय सागरजी

सनावद. शाबाश इंडिया। श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन बडा मन्दिर के प्रवचन सभागार में प्रवचन करते हुए पूज्य उपाध्याय श्री विभंजन सागर महाराज ने बताया कि बिना भावों के कोई क्रिया फल नहीं देती। जैसे भाव रखकर कार्य करेंगे, वैसे ही कर्मों का बंध होगा। भावों से ही सब कुछ होता है। यदि व्यक्ति पाँच पापों में लिप्त है तो उसे अशुभ का बंध होगा। यदि भगवान की भक्ति करेंगे तो पुण्य का फल मिलेगा। परिग्रह को छोड़ना है तो ममत्व भाव का त्याग करना होगा। ध्यान करने से पापों से छुटकारा मिलता है। राग द्वेष के अभाव में शुद्ध भाव बनते हैं। सम्यदर्शन की महत्ता बताते हुए मुनि श्री अक्षय सागर महाराज ने बताया कि संसारी प्राणी के दुःखों का कारण अपने - अपने कर्म है। जिस व्यक्ति ने पर पदार्थों को लक्ष्य में रखकर कार्य किया वह दुख उठाता है। श्रावकों के लिए देवपूजा, गुरु की उपासना, स्वाध्याय संयम,तप और ध्यान तथा मुनियों के लिए वंदना प्रतिक्रमण आदि पर षट कर्म सम्यग्दर्शन पूर्वक करना चाहिए क्योंकि यदि ज्ञान के साथ सम्यग्दर्शन नहीं है तो आगे की धर्म क्रिया सार्थक फल नहीं देती है। मिथ्यात्व पर विजय पाने के लिए सम्यग्दर्शन ग्रहण करना जरूरी है। उपरोक्त जानकारी देते हुए पार्श्व ज्योति मंच के अध्यक्ष डॉ नरेंद्र जैन भारती, आशीष झांझरी, कमलेश भूच ने बताया कि पूज्य उपाध्याय श्री विभंजन सागर जी ने आदिनाथ जिनालय में अभिषेक तथा शांतिधारा कराई। सुनील भूच, आशीष झांझरी, ज्ञानचंद भूच ने शांतिधारा की। की। उपाध्याय श्री विभंजन सागर जी तथा क्षुल्लक जी ने सावित्री बाई जटाले तथा रजनी भूच के निवास पर मुनि अक्षय सागर जी, निराकुल सागर जी एवं विश्वज्ञेय सागर जी ने सुनील पंचोलिया के निवास पर विधि मिलने पर आहार ग्रहण किया। राहुल भूच, जयश्री जैन, आस्था भूच, मधु भूच ने आहार दिया।

भगवान महावीर पैनोरमा का भव्य शिलान्यास संपन्न

चंद्रेश कुमार जैन. शाबाश इंडिया

श्रीमहावीरजी। दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी में जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के भव्य पैनोरमा के प्रथम चरण का शिलान्यास शनिवार प्रातः 11 बजे बड़े धूमधाम से संपन्न हुआ।यह महत्वाकांक्षी परियोजना राजस्थान सरकार एवं राजस्थान धरोहर प्राधिकरण के सहयोग से तैयार की जा रही है। नेमिकुमार पाटनी ने बताया कि पैनोरमा में भगवान महावीर के जीवन, उनके तत्त्व-दर्शन, तप-त्याग तथा अहिंसा के सार्वभौमिक संदेश को अत्याधुनिक तकनीक और भव्य स्थापत्य कला के माध्यम से विश्व पटल पर प्रस्तुत किया जाएगा।यह पैनोरमा दिगंबर जैन संस्कृति का गौरवशाली प्रतीक बनेगा और भगवान महावीर के उपदेशों एवं संदेशों को आमजन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। पंडित मुकेश जैन शास्त्री ने जैन परम्परा अनुसार भूमि पूजन कर शिलान्यास कार्यक्रम सम्पन्न कराया इस मौके पर उप जिला कलेक्टर हेमराज गुर्जर , अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सत्येन्द्र पाल, अतिशय क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष सुधांशु कासलीवाल, मंत्री सुभाष चंद जैन, संयुक्त मंत्री पी.के. जैन, कमेटी सदस्य अनिल दीवान ,योगेश टोडरका , प्रदीप जैन, एठ अनिल जैन दिगंबर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन के राष्ट्रीय सचिव नरेंद्र जैन नृपत्या, दिगंबर जैन समाज गंगापुर सिटी के अध्यक्ष प्रवीण जैन गंगवाल सुभाष जैन सोगानी सहित ट्रस्ट के सभी पदाधिकारी एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। भगवान महावीरजी तीर्थ क्षेत्र में इस अनूठे पैनोरमा के निर्माण से देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं को जैन धर्म के मूल सिद्धांतों कोआधुनिक एवं आकर्षक ढंग से समझने का अवसर मिलेगा।

श्री दिगंबर जैन महा समिति महिला आंचल त्रिशला संभाग द्वारा तीर्थ यात्रा सम्पन्न

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन महा समिति महिला आंचल त्रिशला संभाग की तरफ से दिनांक 5 दिसंबर को चँवलेश्वर पारसनाथ एवम बिजोलिया की धार्मिक यात्रा की गई।अध्यक्ष रेणु पांड्या एवं सचिव छवि जैन ने बताया कि सभी ने बिजोलिया में भक्तामर का पाठ आरती की। इस अवसर पर शांति मणि द्वारा धार्मिक गेम खिलाया गया। संस्थापक अध्यक्ष चंदा सेठी भी उपस्थिति रही एवं यात्रा में पूर्ण सहयोग रहा। उन्होंने बताया की पुराने नए मेंबर ने मिलकर यात्रा का पूर्ण आनंद लिया। कोषाध्यक्ष सीमा सेठी ने प्रश्नोत्तरी करवा कर सभी को पारितोषिक दिया। सांस्कृतिक मंत्री सोनल पाटनी और मोना चाँदवाड ने हाऊजी खिलाकर यात्रा को और मनोरंजन बनाया। शशि तोतुका, अलका सोगानी, गुनमाला पापड़ीवाल, सीमा बाकलीवाल आदि ने भोजन एवं नाश्ते में सहयोग दिया।

भगवान मल्लिनाथ का ज्ञानकल्याणक धुलियान में मनाया गया

धुलियान मुर्शिदाबाद पश्चिम बंगाल। शनिवार पौष कृष्ण द्वितीया को श्री 1008 भगवान महावीर दिगंबर जैन मंदिर धुलियान में अभिषेक शांतिधारा के पश्चात देवाधिदेव तीनलोक के नाथ सबसे कम समय में मोक्ष निर्वाण प्राप्त करने वाले 19वे तीर्थंकर भगवान मल्लिनाथ का ज्ञान कल्याणक अर्घ हर्षोल्लास के साथ चढ़ाया गया।

प्रेषक : संजय कुमार जैन बड़जात्या

कई लोग अपनी जिंदगी दूसरो पर न्यौछावर कर अपने को धन्य मानते हैं: निर्यापका चार्य मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज

अशोक नगर. शाबाश इंडिया

कई लोग अपनी जिंदगी दूसरो पर न्यौछावर कर अपने आप को धन्य मानते हैं ऐसे लोग भी हैं जगत में जो अपने प्राण न्यौछावर कर भी दूसरे को बचाना चाहते हैं आगम में आया है कि जंगल में मुनि राज तपस्या कर रहे हैं उसी समय एक शेर मुनि राज की ओर झपटा मार कर आगे बढ़ा तब उपस्थित एक सुकर मुनि राज को बचाने कुद पड़ा सवाल ये कि मेरे मरने से कोई लाभ नहीं महाराज जी के जिंदा रहने से कितने लोगों का कल्याण होगा ऐसे लोग भी दुनिया में हैं ये लोग इतना पुण्य कमा लेते हैं जिसका पराबार नहीं है उक्त आश्य केउद्गार सुभाषगंज मैदान में विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि पुगंब श्री सुधासागरजी महाराज ने व्यक्त किए।

घटयात्रा के साथ होगा श्री मद् जिनेन्द्र पंच कल्याणक महोत्सव का शुभारंभ

इस दौरान जैन समाज के मंत्री विजय धुर्रा ने कहा कि परम पूज्य आध्यात्मिक संत निर्यापका चार्य मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य एवं प्रतिष्ठा चार्य प्रदीप भ इया के निर्देशन होने जा रहे श्री मद् जिनेन्द्र पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महा महोत्सव एवं विश्व शांति महायज्ञ एवं गजरथ महोत्सव का शुभारंभ मंगलमय घट यात्रा के साथ होगा इस भव्य शोभायात्रा में भगवान जिनेन्द्र देव के रथयात्रा रजत विमान एवं पालकी यात्रा के साथ प्रातः सात बजे सुभाष गंज मैदान से प्रारंभ होगा यह भव्य शोभायात्रा आचार्य श्री विद्यासागर दार भगवान महावीर मार्ग रेस्ट हाउस गांधी पार्क एफ ओ वी पुल पछाडीखेडा रोड होते हुए पुरानी अनाज मंडी अयोध्या नगरी पहुंचकर धर्म सभा में बदल जायेगी जहां परम पूज्य निर्यापका चार्य मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज के मंगल प्रवचन होंगे जैन समाज अध्यक्ष राकेश कासंल उपाध्यक्ष अजित वरोदिया प्रदीप तारई राजेन्द्र अमन महामंत्री राकेश अमरोद कोषाध्यक्ष सुनील अखाई मंत्री शैलेन्द्र श्रागर मंत्री विजय धुर्रा मंत्री संजीव भारिल्य मीडिया प्रभारी अरविंद कचनार आडिटर संजय के टी संयोजक मनोज रन्नौद उमेश सिघई मनीष सिंघई श्रेयांसघैला थूवोनजी अध्यक्ष अशोकजैन टींगूमिल महामंत्री मनोज भैसरवास विपिन सिंघई समन्वय ग्रुप के साथियों सहित अन्य प्रमुख जनो ने सभी से अनुरोध किया है इस सभी कार्यक्रमों में भाग ले।

जिसे अपना संगा मनता है जब वहीं साथ नहीं देता तो व्यक्ति टूट जाता है

जिसे अपना संगा मनता है जव वहीं साथ नहीं देता तो व्यक्ति पचास प्रतिशत टूट जाता है और जव किस्मत साथ नहीं देती तो व्यक्ति निराशा में चला जाता है और अपने आप की जीवन लीला समाप्त करने पर उतारू हो जाता है जो दुःख से घवराकर आत्महत्या करने चले जाते हैं कर्म उन्हें इससे भी खतरनाक दुःख मिलते हैं जैसे जेल में पचास प्रतिशत से अधिक अपराधी मरना चाहते हैं लेकिन मर नहीं पाते वहां ऐसी व्यवस्था बनाई गई है कि मरना चाहाने वाले मर भी नहीं सकता ऐसे ही कर्म ने ऐसी व्यवस्था बनाई है कि नरक घनघोर दुःख है वहां जीव मरना चहता है लेकिन मर नहीं सकता दुनिया में वे लोग हैं जिसे लोग मारता चाहते हैं वह भी मरना चाहते हैं और दुनिया में ऐसे लोग भी हैं।

मंगलगिरी महामहोत्सव में, पू. गणेश प्रसाद वर्णी की जन्म से लेकर समाधि तक प्रदर्शनी

सागर. शाबाश इंडिया

परम पूज्य आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के मंगल सान्निध्य में आयोजित पंचकल्याणक एवं गजरथ महामहोत्सव मंगल गिरी सागर में वर्णी विकास सभा के तत्वावधान में 29 नवंबर से 5 दिसंबर 2025 तक पूज्य गणेश प्रसाद वर्णी की सचित्र प्रदर्शनी लगाई गई।प्रदर्शनी का उद्घाटन युवा उद्योगपति कपिल मलैया सपरिवार ने किया। वर्णी जी का चित्रानावरण एवं दीपप्रज्वलन वर्णी विकास सभा के पदाधिकारी पं.विजय शास्त्री गुरुजी , डॉ. हरिश्चंद्र जैन कडोरी लाल जैन,अरविंद जैन बण्डा,विनोद जैन द्वारा किया गया। प्रदर्शनी का संकलन सह निर्देशक संजय शास्त्री ढाना ने किया था। प्रदर्शनी निर्देशक कैलाश जैन टीला महामंत्री,संयोजक पं. राजकुमार कर्द प्रदर्शनी लगाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। मीडिया संयोजक मनीष विद्यार्थी ने बताया कि पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी, जिन्होंने 150 से ज्यादा विद्यालय की स्थापना की, जैन समाज में सरस्वती पुत्रों को जीवंत कर,धर्म प्रभावना का महत्वपूर्ण कार्य किया। आज वर्णी जी द्वारा स्थापित गुरुकुलों मैं अध्ययन कर अनेक आचार्य परंपरा के मुनि, वरिष्ठ विद्वान, युवा विद्वान जैन धर्म की पताका लहरा रहे हैं। वर्णी जी बुंदेलखंड के गांधी के नाम से प्रसिद्ध थे, उन्होंने जबलपुर में त्रिपुरी चौक पर कांग्रेस के अधिवेशन में देश स्वतंत्रता के सहयोग लिए अपनी चादर नीलाम कराई थी जो उस समय पांच हजार रुपए में गई थी,समाज वर्णी जी के द्वारा किए कार्य को हमेशा याद करता है। वर्णी विकास सभा द्वारा जन्म स्थली हंसेरा उत्तर प्रदेश में वर्णी स्मारक की स्थापना कर वर्णी जी द्वारा किए हुए, कार्यों को पुनः जीवंत करने का कार्य किया है, उनके किए कार्यों को चित्रों के द्वारा संजोकर, जन्म से लेकर समाधि तक की छाया चित्र प्रदर्शनी द्वारा यह बताने का प्रयास किया गया की वर्णी जी हमारे समाज में किए हुए कार्य के लिए क्यों सर्वमान्य हैं प्रदर्शनी अवलोकन परम पूज्य आचार्य विशुद्ध सागर जी ससंघ, ब्र. जयकुमार निशांत, पं. विनोद कुमार सनत कुमार, पं. पवन दीवान श्रीमंत सेठ सुरेश चंद जैन,राष्ट्रकवि अजय अहिंसा जबलपुर,महिला आश्रम महामंत्री अरुण जैन, पं. राकेश जैन, भारतीय जैन मिलन राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष एड. कमलेंद्र जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आर के जैन दमोह, क्षेत्रीय अध्यक्ष अरुण चंदेरिया के साथ भारतीय जैन मिलन के अनेक पदाधिकारी ने अपनी उपस्थिति।

सादर प्रकाशनार्थः
मनीष विद्यार्थी सागर

मेदांता हॉस्पिटल गुड़गांव द्वारा "KOL MEET – Mission Save Heart" का भव्य आयोजन

जयपुर

दिनांक 6.12.25 को मेदांता हॉस्पिटल गुड़गाँव की ओर से होटल गोल्डन ट्यूलिप एसेंशियल्स, M.I. रोड, जयपुर में "KOL MEET – Mission Save Heart" का आयोजन किया गया।कार्यक्रम का नेतृत्व अस्पताल के अध्यक्ष डॉ. आर. आर. कासलीवाल द्वारा किया गया।इस अवसर पर डॉ. कासलीवाल, डॉ. कैलाश गर्ग एवं अतुल बडजात्या के प्रेरक उद्बोधन ने उपस्थितजनों को हृदय स्वास्थ्य के महत्व से अवगत कराया। कार्यक्रम के सफल संचालन में प्रबंधन टीम से दीपेश अग्रवाल, राजीव शुक्ला और अंकिता पवार की सक्रिय भूमिका रही।कार्यक्रम में दिगंबर जैन महासमिति पश्चिम संभाग के अध्यक्ष निर्मल कुमार संघी ने बताया कि इस अवसर पर दिगंबर जैन महासमिति के पदाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति रही, जिनमे सुरेंद्र कुमार पांड्या (राष्ट्रीय महामंत्री), अनिल जैन (आंचलिक अध्यक्ष), महावीर बाकलीवाल (आंचलिक महामंत्री),डॉ. णमोकार जैन, श्रीमती शशि जैन, राकेश संघी, अनिल छाबड़ातथा समिति के अन्य अनेक गणमान्य सदस्य शामिल थे।कार्यक्रम में डॉ. कासलीवाल ने हृदय रोग, उसकी रोकथाम और उपचार से जुड़ी अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारियाँ सरल और सहज भाषा में साझा कीं। विभिन्न समुदायों से आए प्रतिनिधियों तथा सदस्यों ने अनेक प्रश्न पूछे, जिनका डॉ. कासलीवाल ने संतोषजनक उत्तर दिया।महासमिति की ओर सुरेंद्र कुमार पांड्या व महावीर बाकलीवाल द्वारा भी महत्वपूर्ण प्रश्न प्रस्तुत किए गए, जिनके समाधानपूर्ण उत्तर प्राप्त हुए।कार्यक्रम का समापन स्वादिष्ट दोपहर भोज के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुआ।